स्थापना दिवस

कलाभवन में आइआइएम रांची का 11वां स्थापना दिवस मनाया गया, डॉ शैलेश अय्यंगर ने कहा

दो वर्ष में प्रबंधन में महारत हासिल नहीं कर सकते, गुण सीख सकते हैं

लाइफ रिपोर्टर @ रांची
life.ranchi@prabhatkhabar.in

दो वर्ष की पढ़ाई कर कोई भी विद्यार्थी प्रबंधन में महारत नहीं हासिल कर सकता. हां, दो वर्षों में महारथी बनने का गुण जरूर सीख सकता है. इसके बाद प्रयासरत रहने की जरूरत है. यह बातें सिनोफी इंडिया के पूर्व प्रबंध निदेशक डॉ शैलेश अय्यंगर ने कहीं. वह होटवार स्थित डॉ रामदयाल मुंडा कलाभवन में रविवार को आयोजित आइआइएम रांची के 11वें स्थापना दिवस में बोल रहे थे.

उन्होंने कहा कि एक विद्यार्थी को किसी संस्थान का नेतृत्वकर्ता बनने के लिए वर्षों लग जाते हैं. समय के साथ मिलनेवाला अनुभव नौकरी पेशा को मजबूती देती है. इस समय को पूरा करने के लिए कॉलेज की पढ़ाई काम आती है. उन्होंने कहा कि करियर बनाने के लिए खुद को तैयार करते रहने की जरूरी है. साथ ही इस बीच जीवन के उतार-चढ़ाव से सीख लेते हुए खुद को काबिल बनाना भी जरूरी है.

होटवार स्थित डॉ रामदयाल मुंडा कला भवन में रविवार को आयोजित स्थापना दिवस में शामिल विशेषज्ञ और विद्यार्थी.

इनोवेटिव बन रोजगार को दें चुनौती

मुख्य अतिथि शंकर ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रिज के प्रवीण शंकर पांडेय ने तेजी से बदल रही देश की परिस्थिति की जानकारी दी. उन्होंने कहा कि समय के साथ कुछ नया तैयार करने में अच्छा समय लगता है. इसमें तकनीक हमारी मदद करती है. इस्तेमाल के साथ इनके उपयोग को सीखना जरूरी है, जिससे परिवर्तन किसी पर हावि न हो. उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि इनोवेशन से बदलाव लाया जा सकता है. इससे आप रोजगार को चुनौती दे सकते हैं.

आधुनिक तकनीक बदल रही व्यवस्था

वक्ता संजय सिन्हा ने कहा कि पिछले 30 वर्षों से ऊर्जा के विभिन्न श्रोत पर काम किया जा रहा है. ऐसे में वर्ष 2040 तक ऊर्जा के कई ऐसे श्रोत सामने आ जायेंगे, जिन्हें विश्वस्तर पर इस्तेमाल किया जा सकेगा. यह बदलाव तकनीक के बदलते आयाम होंगे, जो मानव जीवन को प्रभावित करेगी. ऐसे में उन्होंने युवाओं को ऊर्जा के विभिन्न श्रोत जैसे सोलर पावर, हाइड्रो इलेक्ट्रिकल पावर, विंड पावर और बेकार पड़े सामान से ऊर्जा के श्रोत और उनके इस्तेमाल को समझने की बात कही.

रचनात्मक चिंतन की जरूरत

इस दौरान डॉ हासित जोशीपुरी ने भविष्य की चुनौतियों के प्रति युवाओं को सजग किया. उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में शिक्षा से ज्यादा रचनात्मक चिंतन की जरूरत है. इससे नया काम आसान होगा. साथ ही समाज को बेहतर विकल्प मिलेगा. इससे बदलाव को न रोक कर उसे बढ़ावा दिया जा सकता है.

सफल होने के लिए पेशा मायने नहीं रखता

इस दौरान संस्थान के स्पेशल इंटरेस्ट ग्रुप के विद्यार्थियों ने स्किट की प्रस्तुति दी. भाई-बहन के जीवन को पेश किया गया. इसमें बहन कराटे में अपना भविष्य बनान चाहती है, वहीं भाई अपने शौक से खाना बनाने का काम करना चाहता है. जबकि परिवार वालों को इनके पेशे से आपति है, पर अंतत: दोनों ही अपने लक्ष्य के प्रति सजग रहकर उसे पूरा करते हैं. साबित करते हैं कि सफल होने के लिए पेशा का कोई लिंग नहीं होता. स्किट के अलावा विद्यार्थियों के फ्रॉगी फीट ग्रुप ने डांस और म्यूजिकल प्रस्तुति से सबका मन मोह लिया. मौके पर संस्थान के निदेशक डॉ शैलेंद्र सिंह, डॉ प्रदीप कुमार बाला, डॉ रेखा सिंघल आदि मौजूद थे.

Prabhat Khabar, 16.12.2019, Pg. 15